आरती श्री सत्यनारायण जी की

जय लक्ष्मीरमणा श्री जय लक्ष्मीरमणा ।
सत्यनारायण स्वामी जनपातक हरणा ।। जय..

रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे ।
नारद करत निराजन घंटा ध्वनि बाजे ।। जय..

प्रगट भये कलि कारण द्विज को दरश दियो ।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो ।। जय..

दुर्बल भील कठारो इन पर कृपा करी ।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत्ति हरी ।। जय...

वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी ।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फिर स्तुति कीनी ।। जय...

भाव भक्ति के कारण छिन-छिन रूप धर्‌यो ।
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सर्‌यो ।। जय...

ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी ।
मनवांछित फल दीन्हो दीनदयाल हरी ।। जय...

चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा ।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा ।। जय...

श्री सत्यनारायणजी की आरति जो कोइ नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे ।। जय...

विवरण

मनुष्य के सभी पापों को हरने वाले, माँ लक्ष्मी के स्वामी श्री सत्यनारायण भगवान की जय हो । इनका रत्नों से जड़ा हुआ सिंहासन अद्‌भुत छवि बिखेर रहा है और घंटे की ध्वनि बज रही है, ऐसे समय में ये कलियुग के देवता प्रगट होकर द्विज को दर्शन दिये और बूढ़ा ब्राह्मण बनकर सोने का महल बनवाये । जो दुर्बल हैं, भील हैं तथा कठोर हृदय वाले हैं, उन पर भी ये अपनी कृपा दृष्टि बनाये रखते हैं ।

चन्द्रचूड़ नाम के एक राजा थे उनकी भी इन्होने विपत्तियों को हर लिया । वैश्य भी अगर इन्में श्रद्धा रखें तो उसकी भी ये मनोरथ पूरा करते हैं, तथा वो अच्छे फल भोगकर इनकी स्तुति में लग जाता है ।

अपने भक्तों के भक्ति को एवं भावों देखकर, इन्होने तरह-तरह के रूप धारण किए हैं, जो भी इनके प्रति श्रद्धा धारण करता है, उसके कार्य ये सफल बनाते हैं ।

ग्वाल - बाल एवं राजा के संग इन्होने वन में भक्ति की है, भजन गाये हैं तथा गरीबों पे दया करने वाले ये प्रभु, उनके मन के अनुसार फल भी दिये हैं । इनके प्रसाद में केला, फल, मेवा सवाया सब चढ़ाये जातें हैं तथा ये धूप, दीपक एवं तुलसीदल से ये सत्यनारायण भगवान अति खुश रहते हैं ।

इनकी आरती कोई भी गाता है, उसे ये मनवांछित फल देते है, ये शिवानन्द स्वामी का कहना है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.